देश रक्षा के वास्तविक प्रहरी

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भारत हमारा देश है। एक सौ पच्चीस करोड़ की आबादी यहां अमन चैन से रहती है। यहां अनेक धर्मों और जातियों के लोग, अनेक विचारधाराओं वाले लोग सद्भावना पूर्वक रहते है। अनेक आक्रमणकारी यहां आये और भारतीय संस्कृति में समा गये। भारत की उदारता प्रसिद्ध है। यहां के लोग अहिंसा, मैत्री, परोपकार, शांति, सद्भावना और समता में विश्वास करते है। देश की रक्षा के लिए मर मिटने के लिए सदैव तत्पर रहते है। देश की रक्षा का उत्तरदायित्व देश की सीमा की रक्षा करने वाले प्रहरियों पर होती है। ये प्रहरी अपनी जान की परवाह न करके देश की रक्षा करते हैं। जब देश सो रहा होता है तो हमारे देश के सैनिक सीमा पर जागते हुए सजग रहते है। यही देश के वास्तविक प्रहरी हैं। सीमा की सुरक्षा करना, देश को बाहरी आक्रमण से बचाना और जल, थल, नभ में पराक्रम दिखलाना इनका कर्त्तव्य है। तिरंगे की रक्षा करना और उसके सम्मान को बनाये रखना इनका प्रमुख कर्त्तव्य है। सीमा के ऐसे प्रहरी जब गर्मी, सर्दी और बरसात में सजग रहते हैं तभी देश सुखपूर्वक नींद ले सकता है। सीमा की सुरक्षा सैनिकों के हांथ में है। वैसे देश की रक्षा में सभी देशवासियों का हाथ रहता है। चाहे वह किसान हो, चाहे शिक्षक हो, चाहे चिकित्सक हो, चाहे राजनेता हो, या व्यापारी। सभी यदि मन से कार्य करते हैं तभी देश सुरक्षित रह सकता है। देश रक्षा में महापुरुषों का भी बहुत बड़ा योगदान है। महापुरुष देशवासियों को एकजुट करने में और उन्हें प्रेरणा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। साहित्यकारों का भी महत्वपूर्ण योगदान देश की सुरक्षा में रहता है। साहित्य के माध्यम से लोगों में उत्साह भरना, उन्हें सदैव प्रेरित करते रहना साहित्यकारों का कार्य है।

राष्ट्र कवि दिनकर, राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त, सोहनलाल द्विवेदी, भारतेन्दु हरिशचन्द्र, पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला इत्यादि साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से देश रक्षा की भावना लोगों में भरी है। महापुरुषों में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, रविन्द्रनाथ टैगोर,

विवेकानन्द आदि महापुरुषों ने एक सजग प्रहरी का कार्य करते हुए देशवासियों को सदैव प्रेरित किया है। युद्ध केवल अस्त्र–शस्त्रों से ही नहीं लड़ा जाता बल्कि विचारों से भी लड़ा जाता है। आज के युग में मुख्य लड़ाई विचारों की है। पहले विचारों का वैचारिक युद्ध होता है, इसके बाद उसकी परिणति अस्त्र–शस्त्र के युद्ध में होती है। इसलिए वैचारिक प्रक्रिया युद्ध की चरम परिणति में दिखाई देती है। महात्मा गांधी भारत राष्ट्र के सजग प्रहरी थे। उन्होंने देशवासियों को देश रक्षा के लिए तैयार किया। उनके विचारों का ऐसा प्रभाव पड़ा कि अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा। महात्मा गांधी ने सामान्य जनता को जागृत करके राष्ट्रवाद का पाठ पढ़ाया। उन्होंने सत्य और अहिंसा के अस्त्र का प्रयोग किया। यह एक ऐसा अस्त्र है जो मानव का आन्तरिक परिवर्तन कर देता है। गांधीजी के राष्ट्रवाद सम्बन्धी विचारों पर भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की छाप स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। गांधीजी ने नैतिक मूल्यों को स्वयं जीवन में उतारा और बाद में उसका उपदेश दिया। इन मूल्यों को वे जीवन का अनिवार्य अंग मानते थे। वैसे इन सद्गुणों के नामकरण या मौलिक स्वरूप में कोई नवीनता नहीं है, उनका उल्लेख भारतीय परम्परा में सदा से होता रहा है, किन्तु गांधी ने इन पर अपने ढंग से एक नया चिन्तन दिया, तथा इनमें निहित नैतिकता के पक्ष को उभारा।

भारतीय चिन्तन में पांच प्रकार के सदाचारों की गणना हुयी है– अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह। गांधीजी के अनुसार इन सदाचारों का पालन केवल बाह्यरूप से ही नहीं, बल्कि मन, वचन और कर्म से भी होना चाहिए। गांधीजी के नैतिक विचारों में अहिंसा सर्वप्रमुख है। वे उसे परम धर्म (अहिंसा परमो धर्मः) मानते थे। अहिंसा का इतना अधिक महत्त्व इसलिये है कि सत्य जिसे गांधीजी ईश्वर मानते हैं कि अनुभूति प्रेम और अहिंसा से ही हो सकती है। गांधीजी के शब्दों में जब आप सत्य को ईश्वर के रूप में जानना चाहें तो उसका एक मात्र उपाय है प्रेम और अहिंसा। भावनात्मक पक्ष में अहिंसा प्रेम है और निषेधात्मक पक्ष में अहिंसा किसी जीव की हत्या न करना है। गांधीजी ने सत्य को ईश्वर कहा है। सत्य को जानने का मतलब है ईश्वर को जानना। मनुष्य के भीतर काम, क्रोध, मद, लोभ, वासना और असत्य ये छः शत्रु हैं जो सदैव घृणा, दुर्भावना, ईर्ष्या आदि उत्पन्न करते हैं। जिससे मानव सत्य का यथार्थ दर्शन नहीं कर पाता। गांधी जी के अनुसार सत्यभाषण करना चाहिए, लेकिन अप्रिय

सत्य नहीं बोलना चाहिए। अस्तेय के सम्बन्ध में गांधीजी के विचार दो रूपों में देखे जाते हैं। अस्तेय का सामान्य अर्थ है– चौर्यवृत्ति का निरसन। इस शब्द का एक और विशिष्ट अर्थ भी है। इसमें अस्तेय का अर्थ हो जाता है कि ऐसी हर वस्तु का त्याग जिसकी हमें अनिवार्य आवश्यकता न हो। अपरिग्रह का अर्थ है उपार्जन करने की वृत्ति पर रोक। परिग्रह की वृत्ति ही सामाजिक बुराइयों की जननी है। इसलिये परिग्रह वृत्ति का त्याग और अपरिग्रह का आचरण ही सदाचार है। ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध में गांधी जी का मत था 'मन और इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण। गांधीजी ने इन पांचों व्रतों का प्रयोग सजग प्रहरी की तरह करके देश में जीवन का संचार किया। इसलिए कहा जाता है कि गांधीजी ने बिना अस्त्र–शस्त्र का प्रयोग किये देश को मुक्त कराया। सैनिकों की तरह महापुरुष भी देश की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।